Dr. DHANVIR PRASAD
ASSISTANT PROFESSOR (G T)
C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI
DEPT.OF.PSYCHOLOGY
L.N.M.U DARBHANGA
MOBILE NO:- 6206696451

CREATIVE THINKING

रचनात्मक या संरचनात्मक चिन्तन वास्तव में चिन्तन का एक महत्वपूर्ण प्रकार है ।चिन्तन के इस पक्ष का संबंध ऐसी कल्पना से है, जिसे हम रचनात्मक विचार कहते हैं ।चिन्तन का यह पक्ष कठिन तथा आश्चर्यजनक है ।कारण, आयु में बृद्धि होने के साथ-साथ रचनात्मक चिन्तन के परिणाम धीरे-धीरे जमा होकर अद्भुत चमत्कार दिखलाते हैं ।रचनात्मक कार्य करने वाले व्यक्ति भी यह नहीं समझ पाते हैं कि उनके रचनात्मक कार्य के पीछे कौन -सी मानसिक क्रियाएं सक्रिय रही हैं ।दूसरी बात यह है कि रचनात्मक विचार हमारे दैनिक जीवन के

विचार से काफी भिन्न होते हैं ।सधारण व्यक्ति यह समझने में सफल नहीं हो पाता है कि रचनात्मक विचार से जो रचनात्मक कार्य संभव होते हैं, वे दैनिक विचार से क्यों संभव नहीं हो पाते हैं ।सच तो यह है कि इस भेद का पता अब तक मनोवैज्ञानिकों को भी ठीक-ठीक नहीं चल सका है ।।इन कठिनाइयों के बावजूद मनोवैज्ञानिकों ने रचनात्मक चिंतन के स्वरूप तथा विकास को समझने का प्रयास किया है ।

विनाके के अनुसार रचनात्मक चिंतन में निम्नलिखित समस्याएं हैं :-

1. श्रष्टा का व्यक्तित्व :-

विज्ञान, कला आदि क्षेत्रों में रचनात्मक चिंतन के बढते हुए उपयोग की दृष्टि से वैज्ञानिकों या कलाकारों के व्यक्तित्व को समझना आवश्यक हो गया है ।इस दिशा में कई प्रयास किये गये हैं ।इस संबंध में फ्रायड का अध्ययन महत्वपूर्ण है, परन्तु यह समस्या आज भी पूरी तरह हल नहीं हो सकी है कि

श्रष्टा की व्यक्तित्व -रचना कैसी होती है और रचनात्मक कार्य के लिए व्यक्तित्व के कौन-कौन से कारक उत्तरदायी है ।

2. सर्जनात्मक योग्यताओं का विकास :-

समस्या यह है कि सर्जनात्मक चिंतन का विकास कैसे होता है ।बच्चों में रचनात्मक चिंतन के विकसित होने में कौन-कौनसे कारक सहायक होते हैं ।यह भी सही है कि रचनात्मक योग्यता के मापन के संबंध में हमारी जानकारी अधिक है ।

3. कलाकार तथा अकलाकार :-

रचनात्मक चिंतन के संबंध में कलाकार तथा अकलाकार के व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन बाह्य रूप से करना भी एक महत्वपूर्ण समस्या है ।इस संबंध में उपलब्ध सूचनाओं से पता चलता है कि इनके बीच वैयक्तिक तथा अवैयक्तिक दोनों तरह के अन्तर पाए जाते हैं ।

4. प्रयोगात्मक सौन्दर्य :-

यहाँ व्यक्ति पर कला के प्रभाव को देखना प्रधान उद्देश्य है ।इस संबंध में उडवरथ का अध्ययन महत्वपूर्ण है ।इसी तरह कोफका आदि ने भी प्रयोगात्मक सौन्दर्य के संबंध में महत्वपूर्ण प्रयास किए ।

5. सर्जनात्मक चिंतन में मानसिक प्रक्रियाएं :-

यहाँ समस्या यह है कि रचनात्मक या सर्जनात्मक कार्य में निहित मानसिक क्रियाओं को कैसे निर्धारित किया जाए ।यह एक महत्वपूर्ण तथा जटिल समस्या है ।